वेलू महासागर में

लेनार्ट एंग

वेलू महासागर में

लेनार्ट एंग

अनुवाद : अवंती देवस्थले

वेलू महासागर में रहता है।
बहुत बड़ा है और जहाँ चाहे
तैर सकता है।
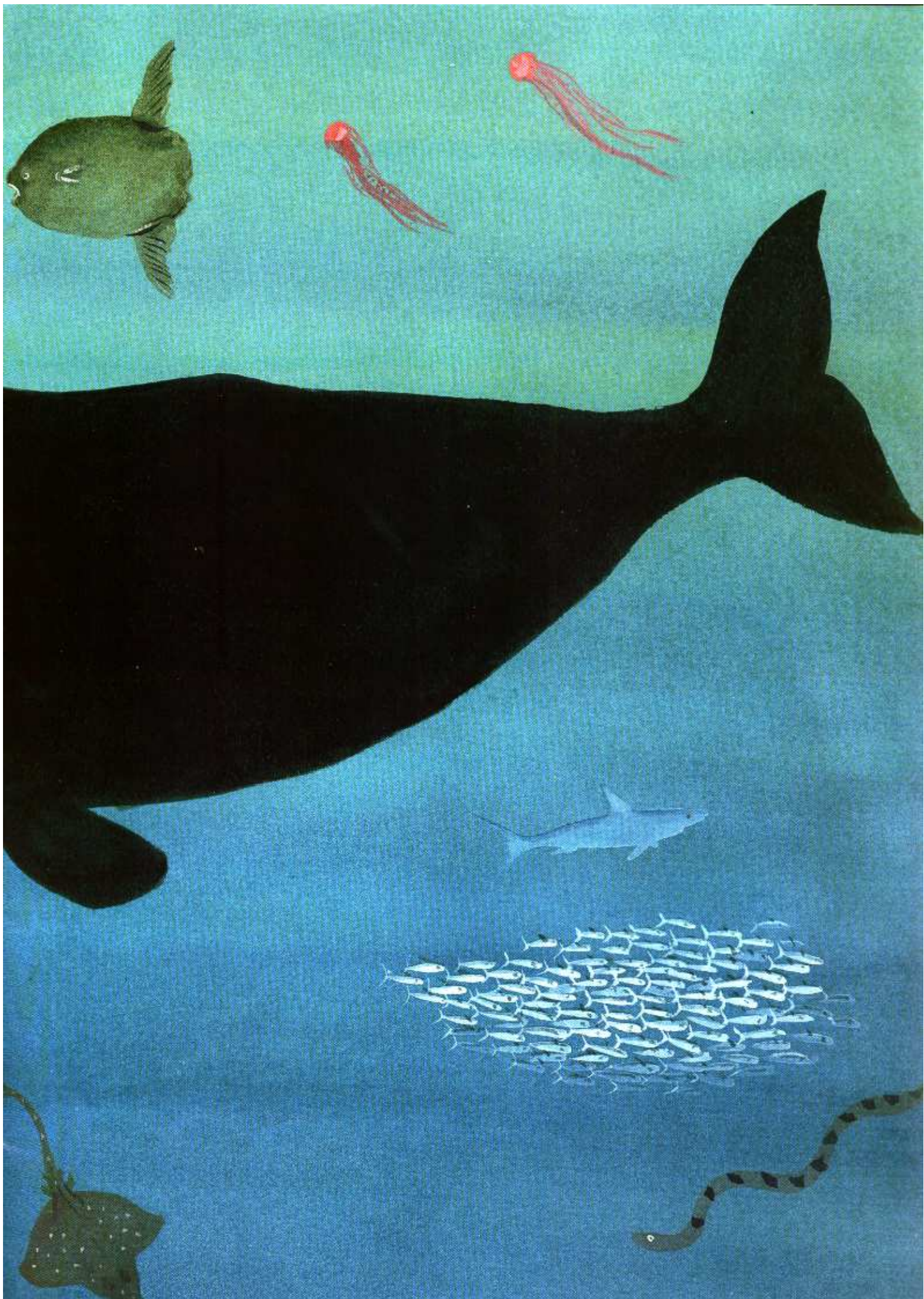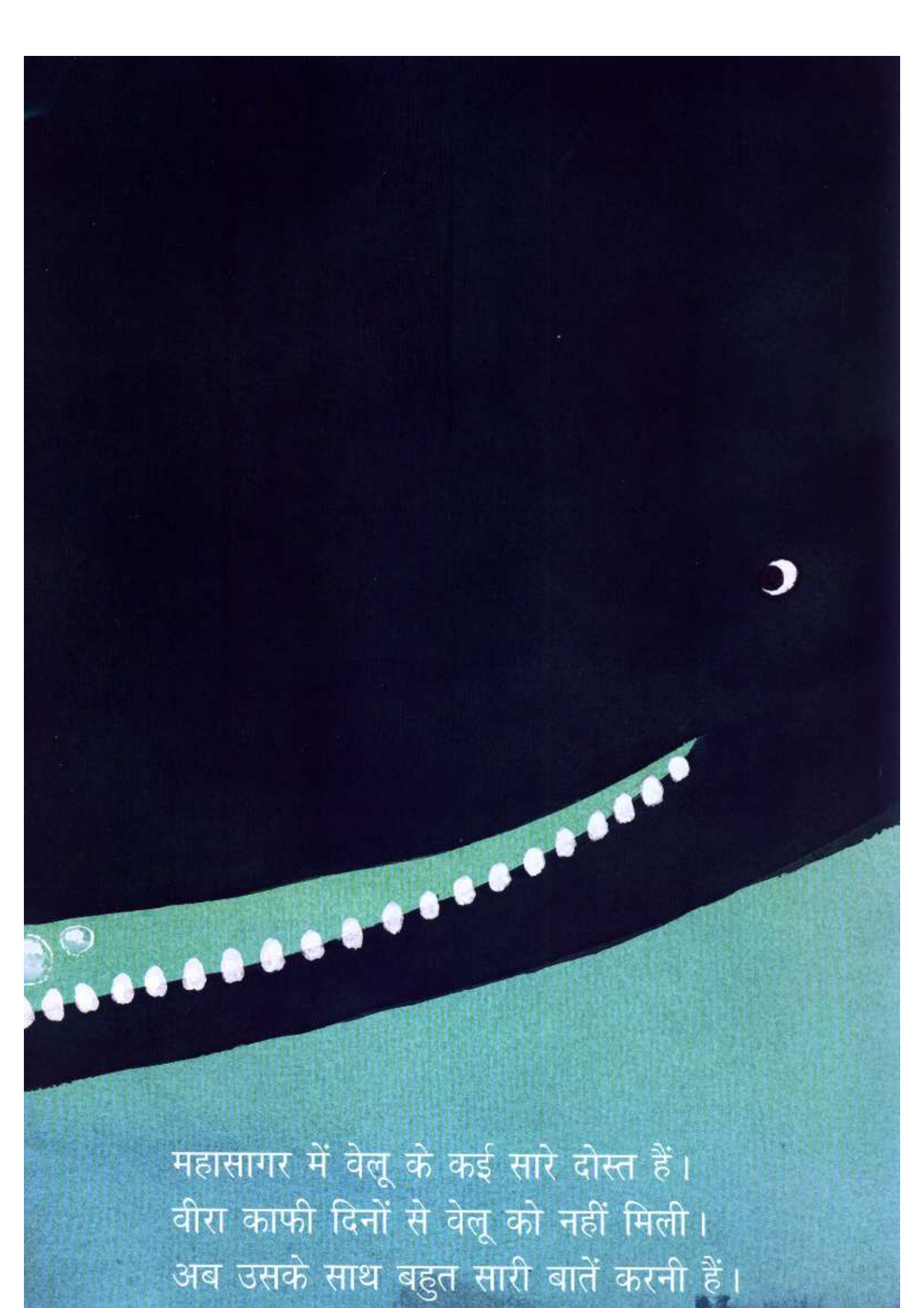
लेकिन बड़ा होने के बावजूद,
उसे लगता होगा कि वह इतने
महा, महा, महा महासागर में
कितना छोटा है।
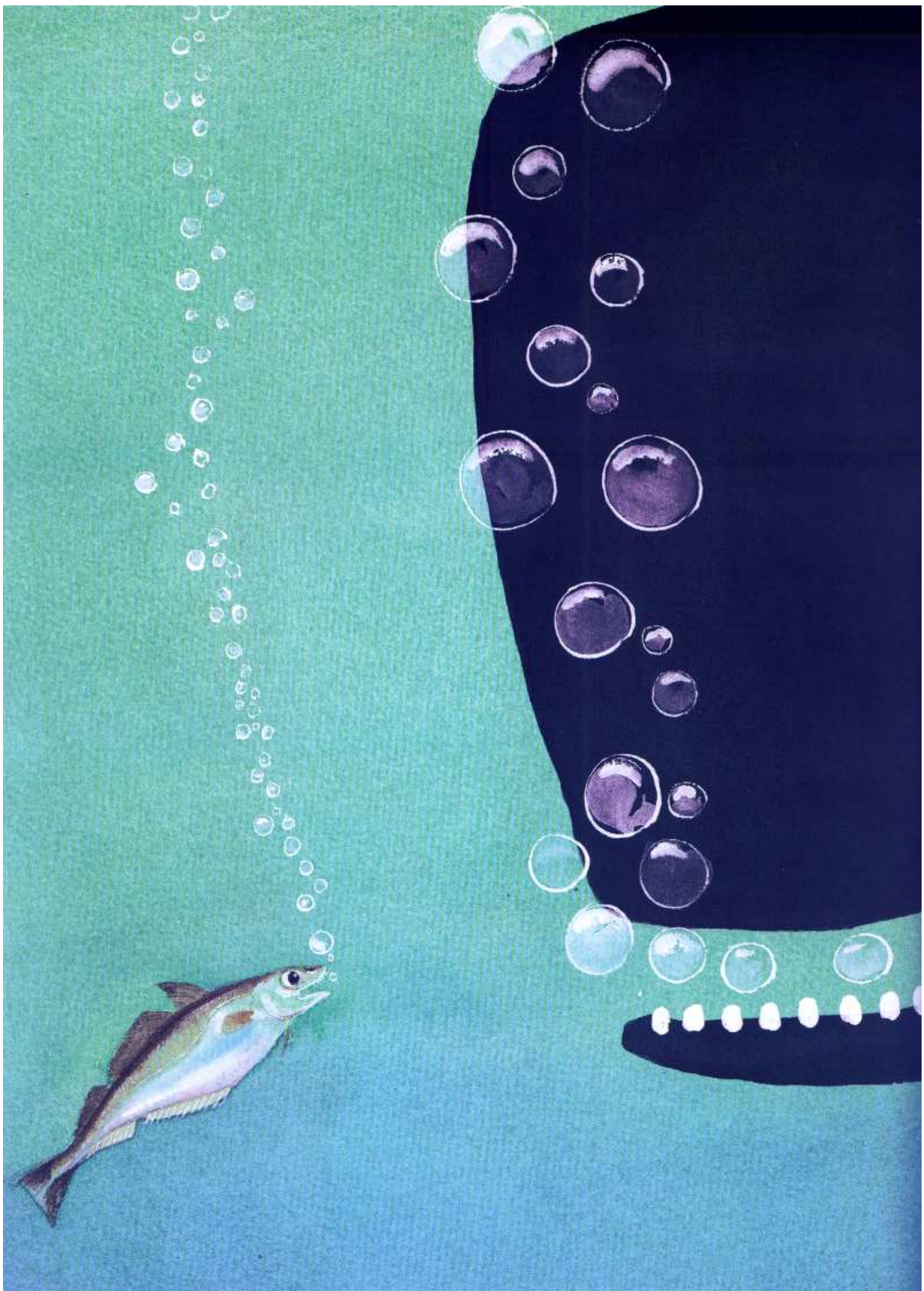
महासागर में वेलू के कई सारे दोस्त हैं।
वीरा काफी दिनों से वेलू को नहीं मिली।
अब उसके साथ बहुत सारी बातें करनी हैं।

रात हो गई है। वेलू महासागर में
धीरे-धीरे झूलता सो रहा है।
भूरा, काली पीठ वाला पक्षी, उसकी बड़ी-सी
नाक पर सोता है तो वेलू को अच्छा लगता है।
किसी का साथ कितना अच्छा होता है।
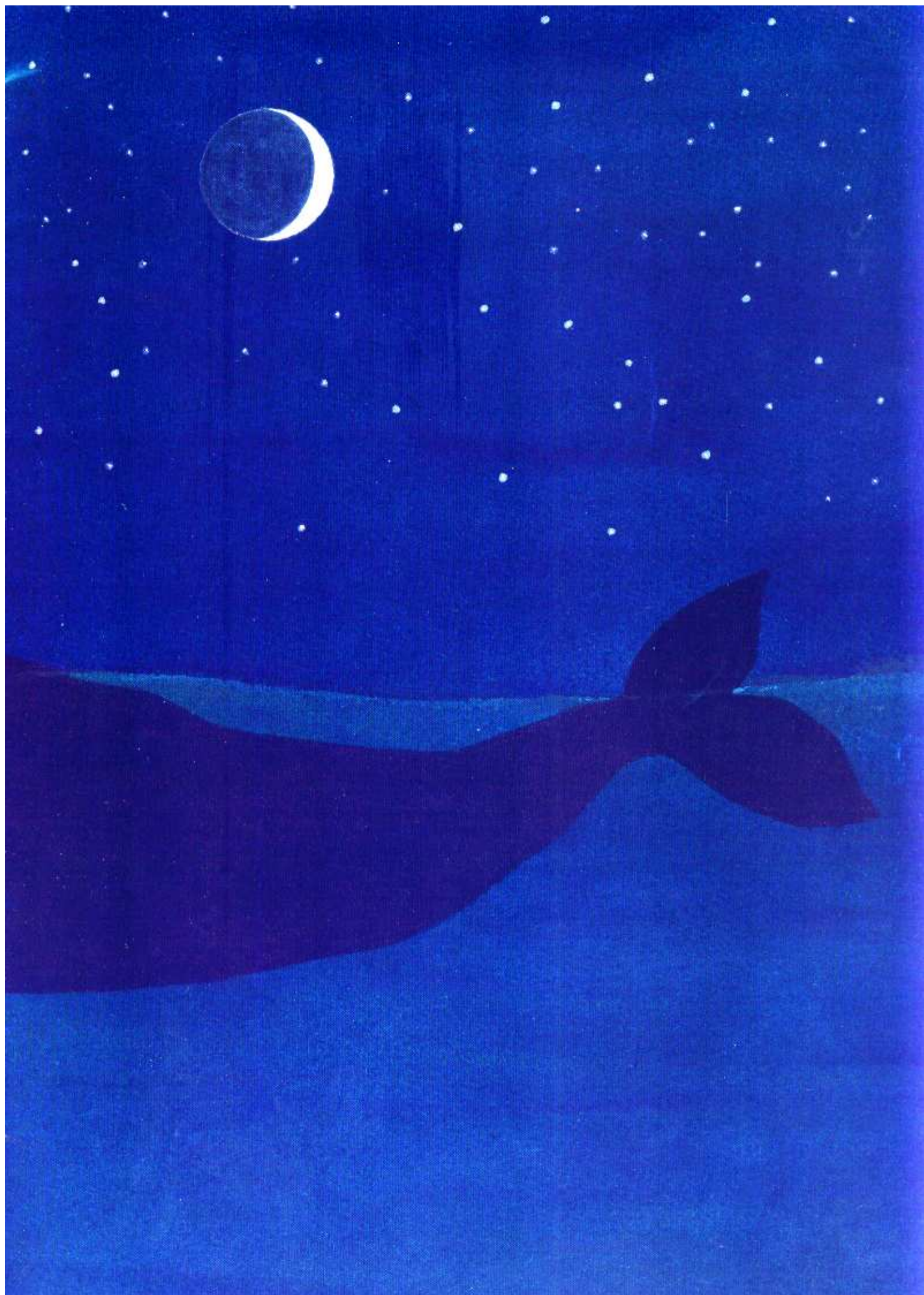
सूरज महासागर पर भी चमकता है
लेकिन ज्यादा गरमी नहीं होती।

अगर काफी गहराई तक डुबकी लगाओ तो अँधेरा लगने लगता है। वेलू उतनी गहराई में डुबकी लगा सकता है।

धूप नहीं होती तो कुछ मछलियाँ खुद ही रोशनी कर लेती हैं।

विशाल, आठ टाँगोंवाला आक्टोपस
बहुत गहराई में रहता है।
वेलू को अच्छा नहीं लगता...
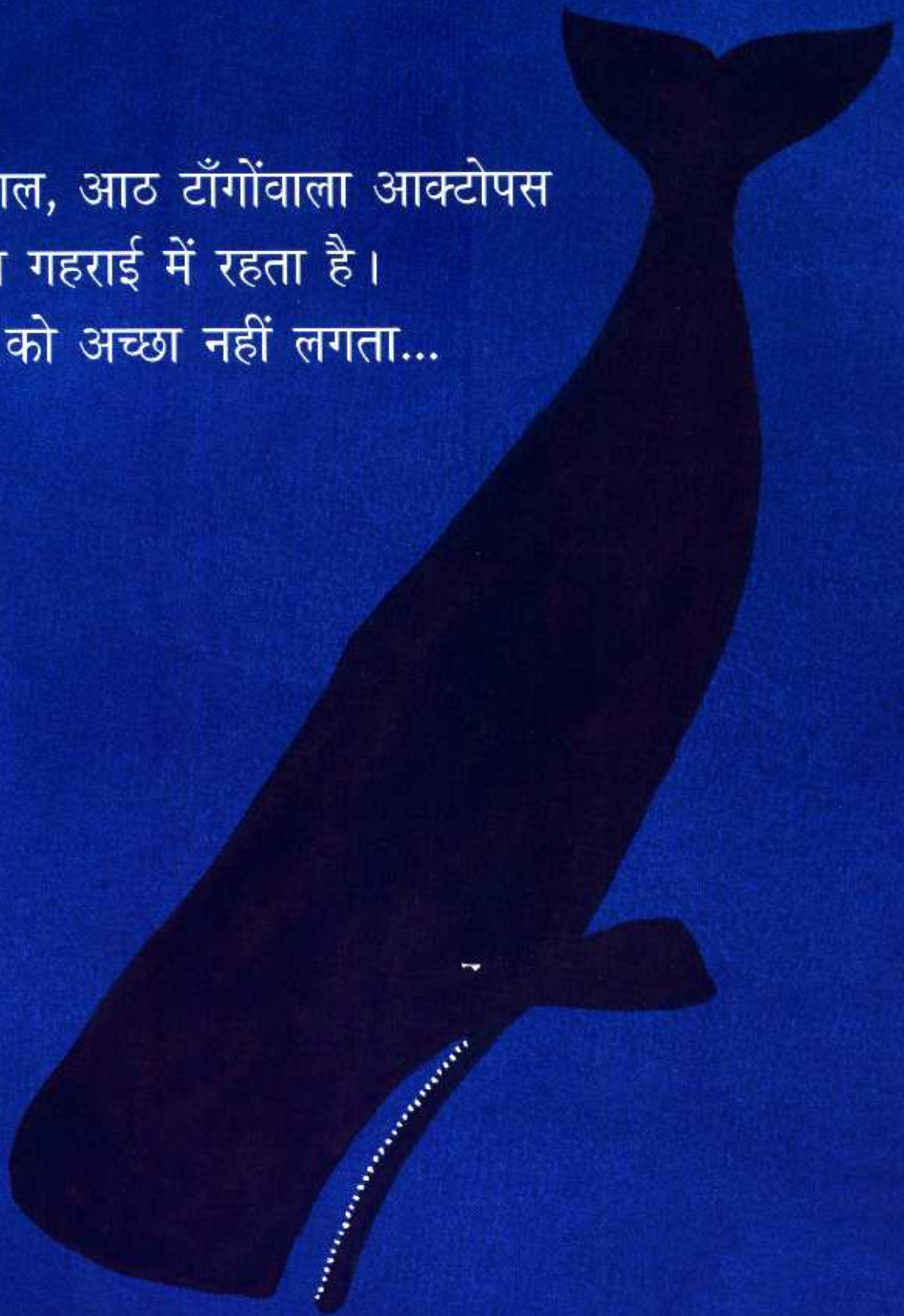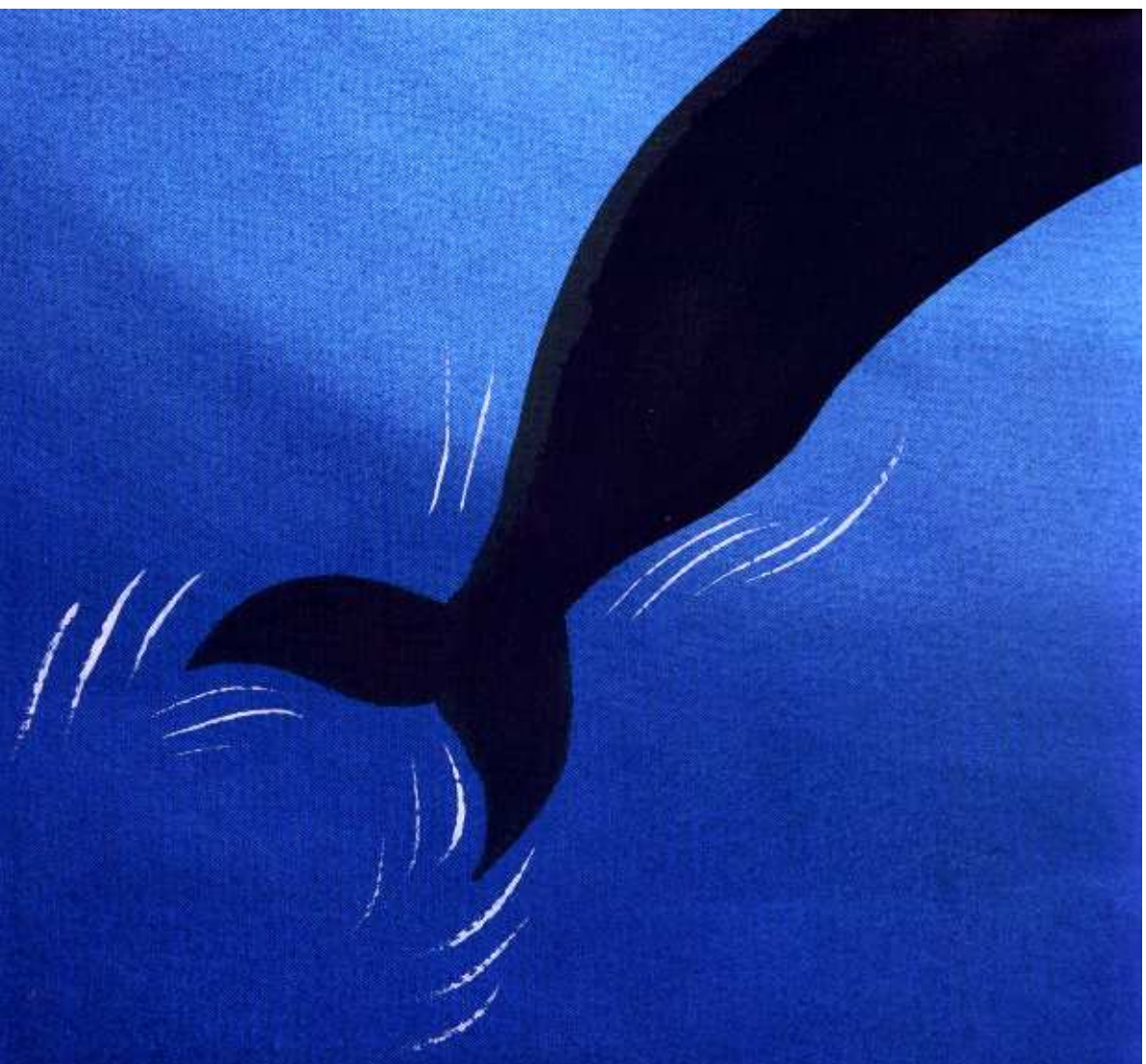
...वह जल्दी से दूर तैर जाता है।
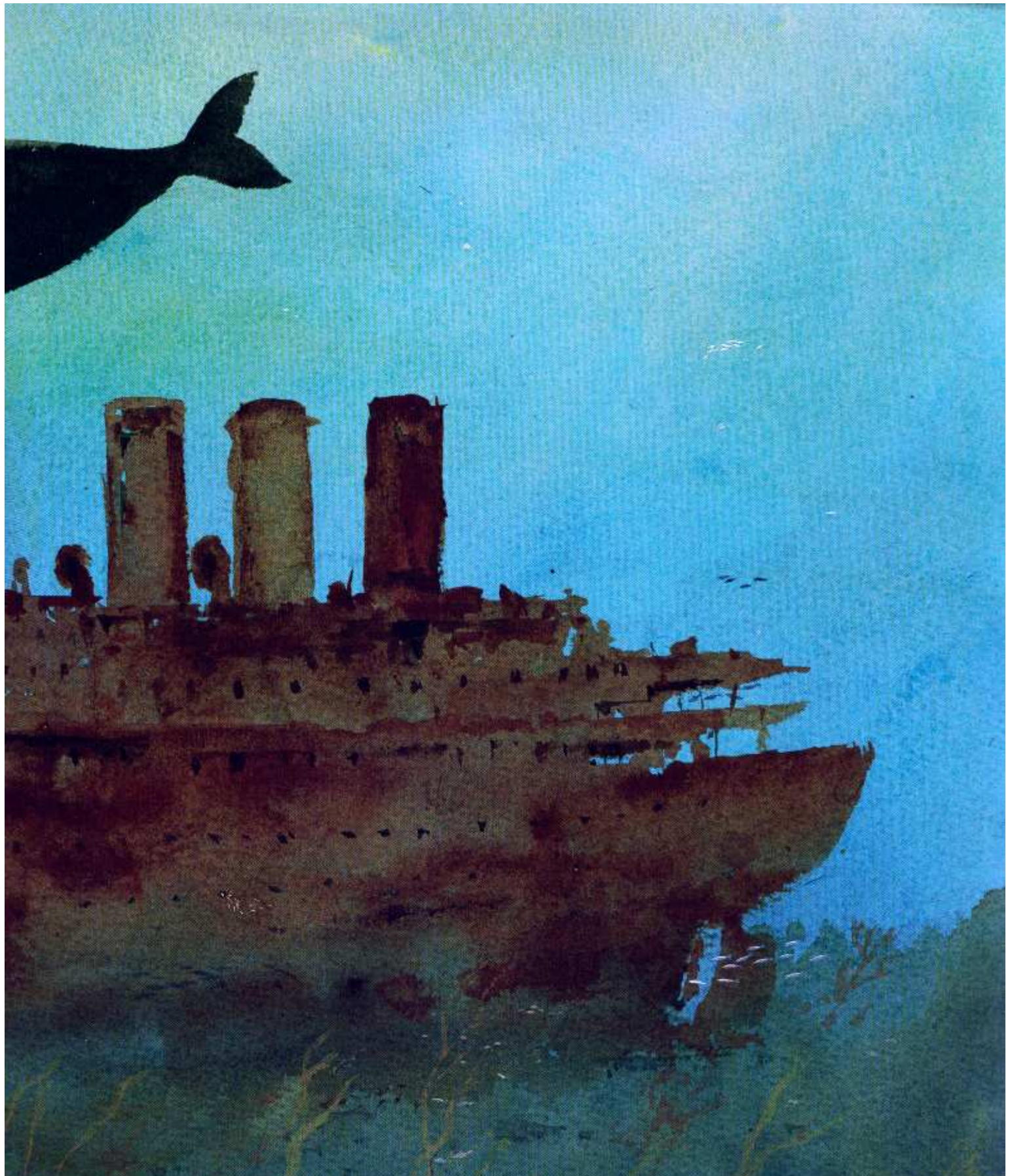
जब वेलू जंग लगे मलबे के आस-पास तैरता है
तो वह परेशान हो जाता है।
वेलू सोचने लगता है कि यह कैसे हुआ होगा।
यह जहाज क्यों डूबा होगा?
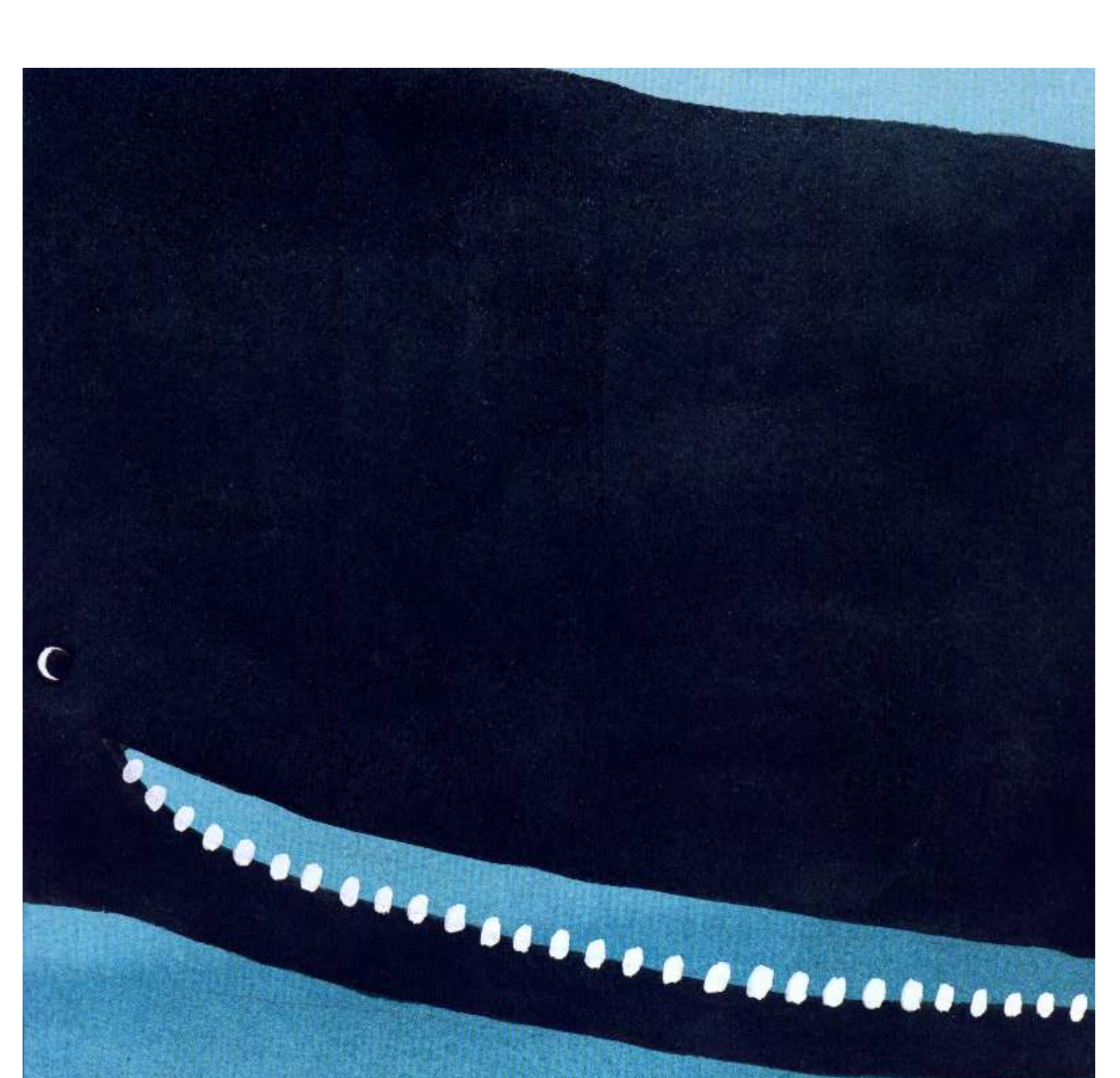
वहाँ क्या हो रहा है?

कुछ शार्क मछलियाँ
एक नन्हे को
तंग कर रही हैं।
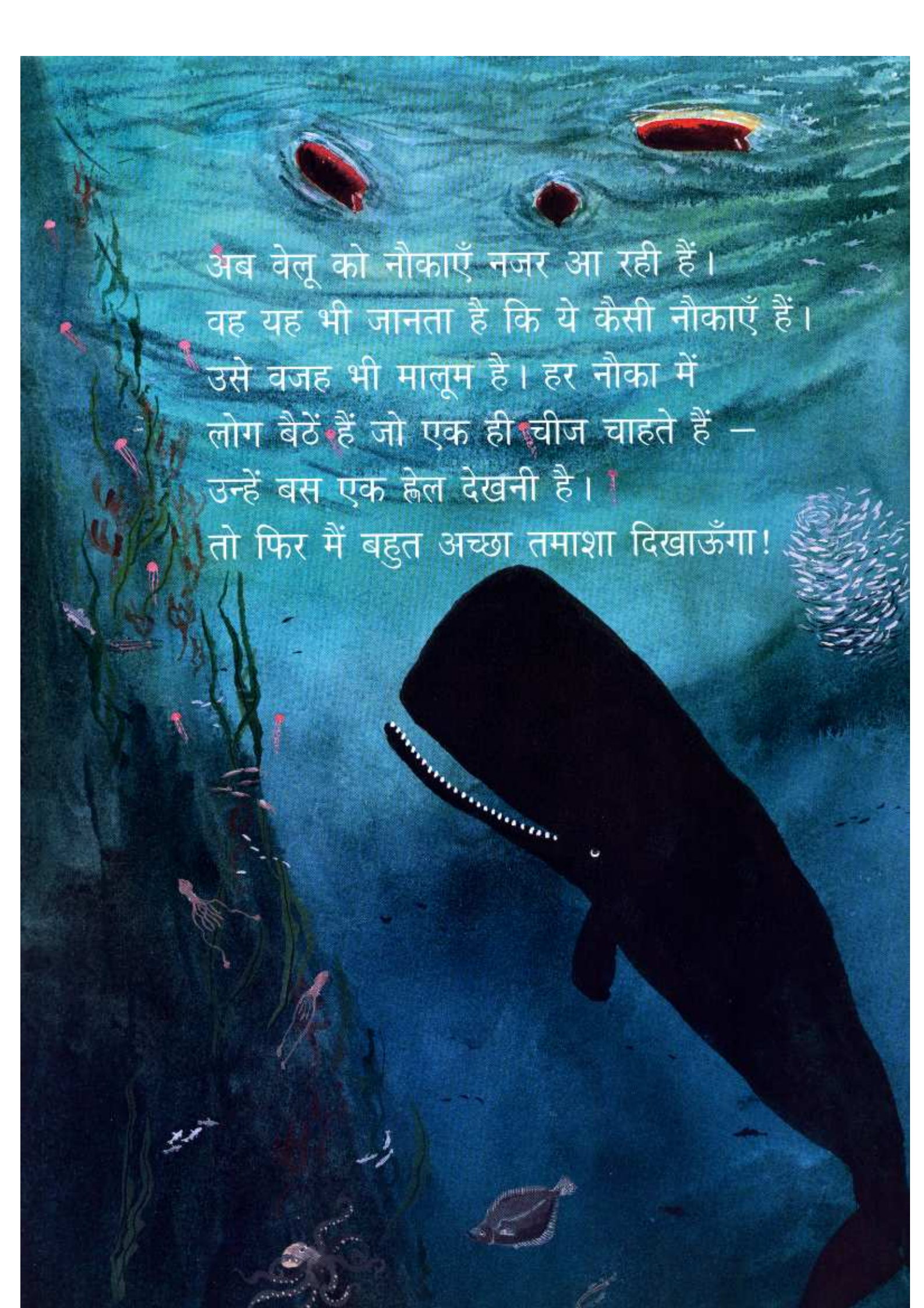
– मुझे लगता है कि तुम्हें और कहीं जाकर तैरना चाहिए,
वेलू शार्कों से कहता है तो वे वहाँ से खिसक जाती हैं।
– मैं कितना खुशनसीब हूँ कि आप आए,
नन्हा कहता है। वे दोनो हँसते हैं।

अब वेलू को नौकाएँ नजर आ रही हैं।
वह यह भी जानता है कि ये कैसी नौकाएँ हैं।
उसे वजह भी मालूम है। हर नौका में
लोग बैठें हैं जो एक ही चीज चाहते हैं –
उन्हें बस एक ह्वेल देखनी है।
तो फिर मैं बहुत अच्छा तमाशा दिखाऊँगा!
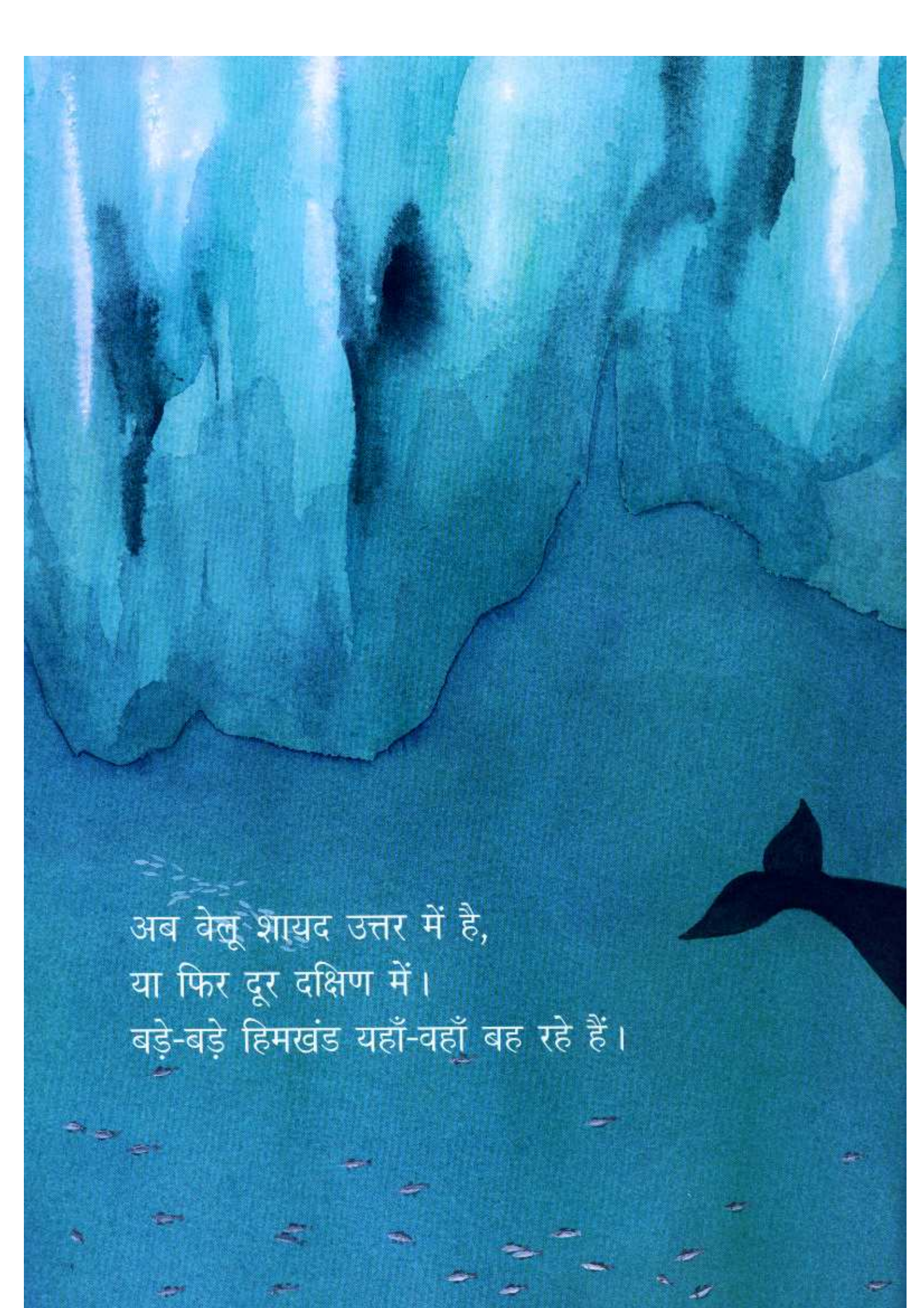
वह उपरी तल की ओर
तेजी से बढ़ता है... और
ऊपर एक छलाँग लगाता है।
छलाँग और फिर छपाक...

...और आखिर में
पूँछ का लहराना...

...लोगों को यह सब
देखना अच्छा लगता है।

अब वेलू शायद उत्तर में है,
या फिर दूर दक्षिण में।
बड़े-बड़े हिमखंड यहाँ-वहाँ बह रहे हैं।
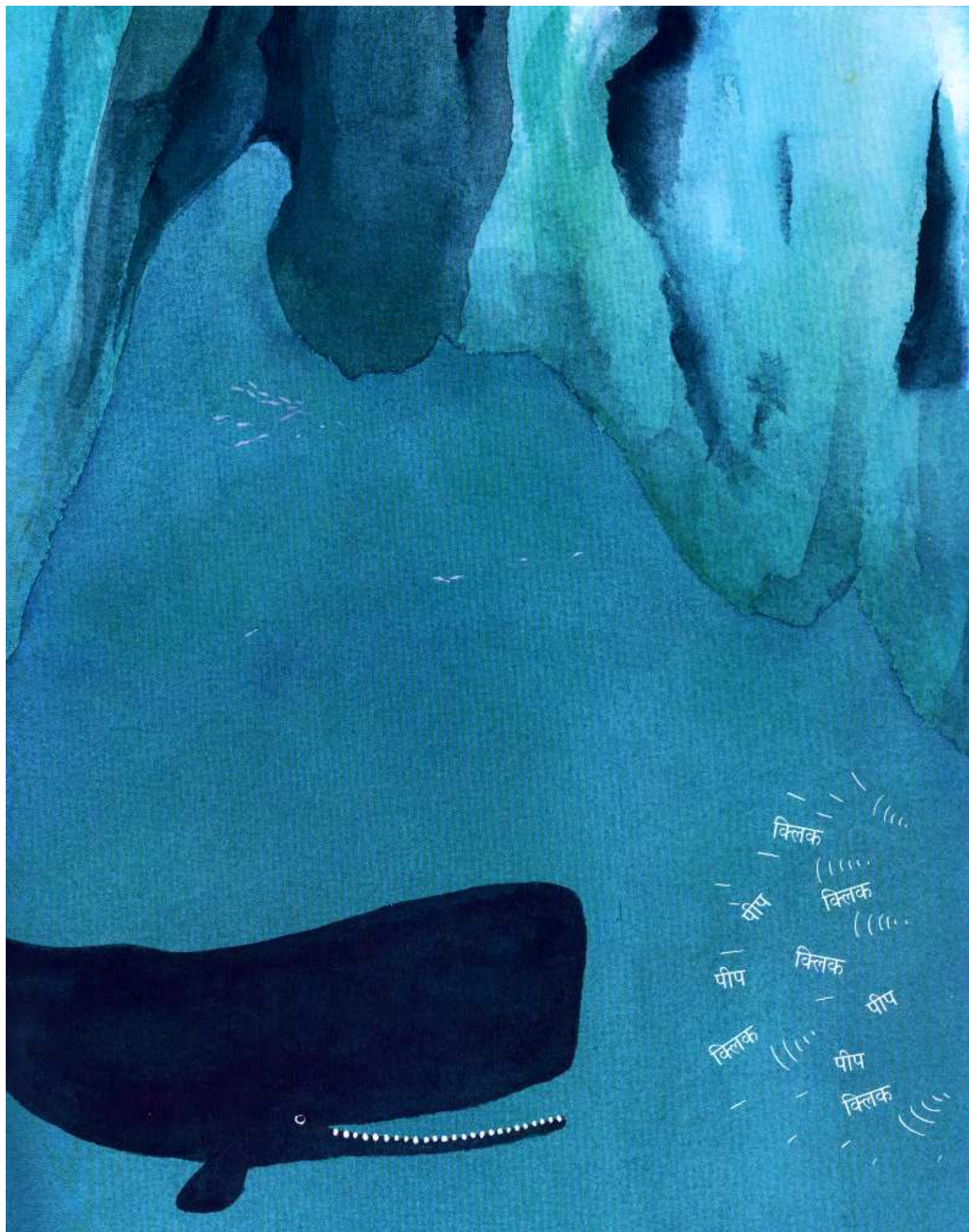
अब उसे एक आवाज सुनाई देती है।
उस आवाज को वह पहचानता है...

विजय
वनिता
...उसे वह बड़ी पसंद है क्योंकि...
वरद
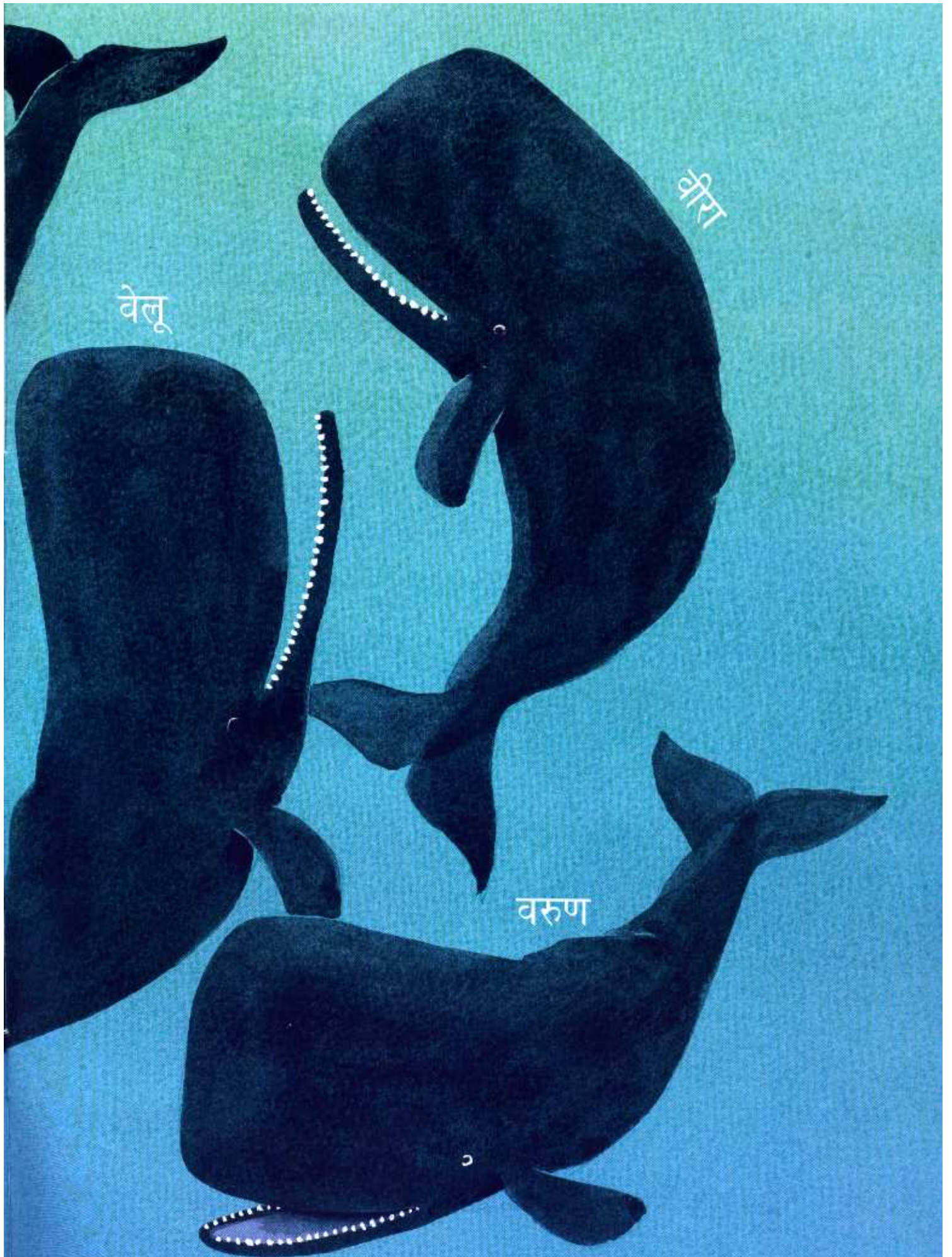
मीरा
वेलू
वरुण
...उसके सब ह्वेल दोस्त कहीं आस-पास हैं।
अब वे सब मिलकर साथ खेल सकते हैं।
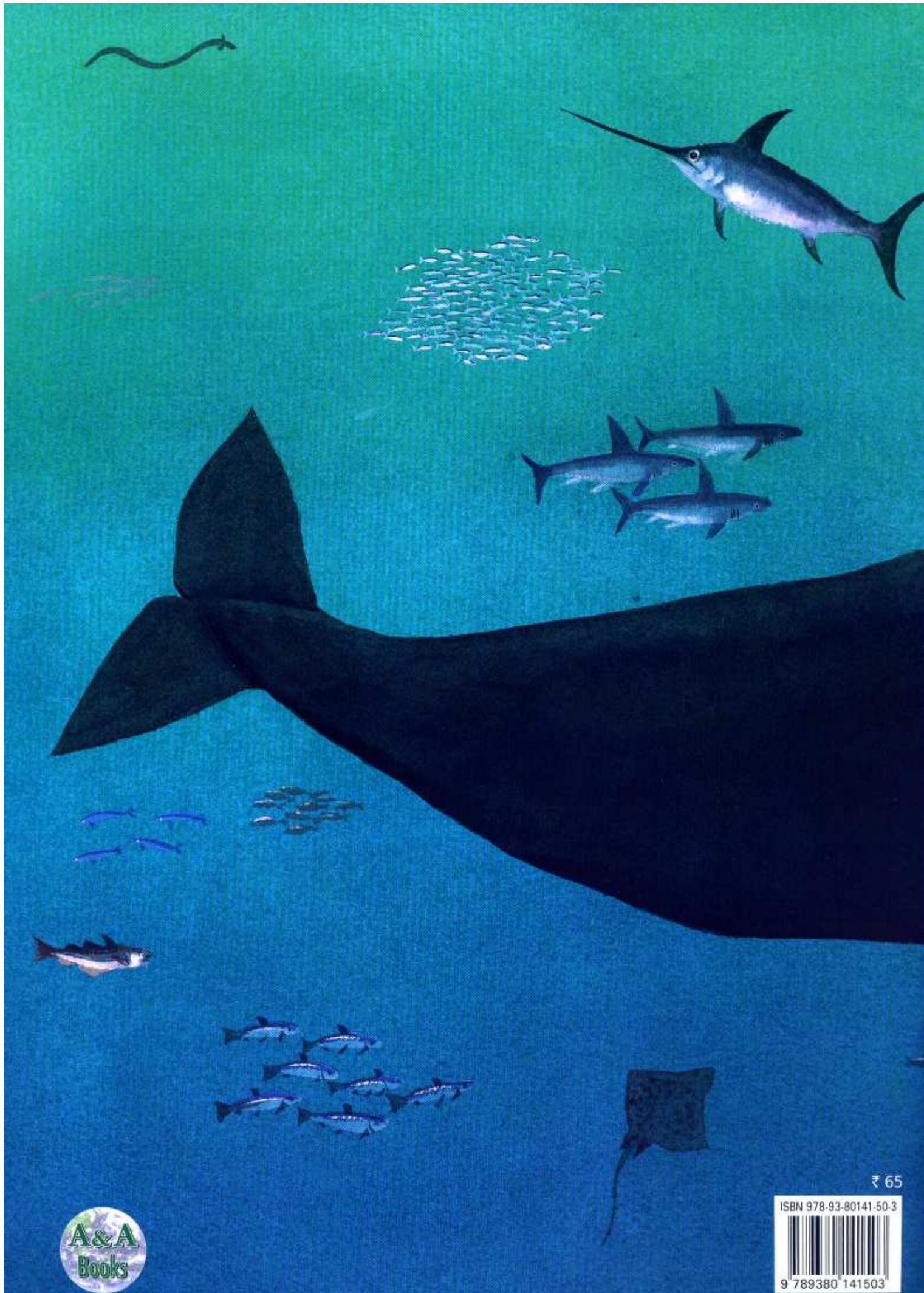
₹ 65
ISBN 978-93-80141-50-3
9 789380 141503
A&A Books